

DPN 6164

Title : धारणी संग्रह DHĀRANĪ SAṆGRAHA

Run. No. 6855

Cat. No.

Micro. No.

Subject Dharani

Religion : Hindu / Bauddha ✓

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt.- New. / Maith.- New. / New.- Nep. /

Size in cms. 16.8 x 7

Folios 13

Lines (in a page) 5

✓
Compl. / Incompl. ✓

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor ✓

फणिन्द्ररत्न वज्राचार्य

Date: NS / SS / VS / KS 973

Ruler / place

Phanindra Ratna

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. / ~~Devanagari~~

Illus. :

Bajra charya

Material : palmleaf / paper / thyasaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

* ॐ नमो भगवते महासन्तुष्टी महागुरुभ्यः नमः ॥ ॐ नमो सन्तुष्टाभाय ॥

P.T.O.

□ सुभ सम्बत् ॥ ९ ७३ म्ति ज्येष्ठ गार्क न्दु खुनु चोया जुल शुभं मंगल स्वर्दा ॥

Complete - १. आर्य मञ्जुश्री महारक्ष्य प्रतिज्ञान नामधारणी
२. पञ्च तथागत नामधारणी
३. आर्य अभयंक्षी नामधारणी

Incomplete - १. आर्य पुष्पाचारिणी नामधारणी /

८६.

चरणी संग्रह

फरणीन्दुरत वज्राचार्य

॥ य ज्ञाननिर्यकविग्न ॥ वा नापिसिधिस्यात्तुदिसिधनि नदामि
 आर्यमंडेइशीरफ्तावकस्यपुगिउम ननागधमप्रादियत्रिसमा
 प ॥ १ ॥ ६०३० ॥ १३ नमो गगवत् ॥ वेनावत्पवत्केउ
 राजाय ॥ नथागगायाह न सम्यक् वद्धाय ॥ गयथा ॥ इत्युक्ते २
 सम २ समय २ गन २ दान २ समासापिगत्रमि अनानमिदम
 वतिमहागेडे निरात्रवे निराकूत्रनिर्वीनसर्व वद्ध विष्टाना

२

सिष्टिगस्वाहा ॥ २ ॥ ६०३० ॥ ३ नमो गगवत् ॥
 ह्यराजाय ॥ नथागगायाह न सम्यक् वद्धाय ॥ गयथा ॥ इकंक
 पिश्वाकनि २ शोयनि २ शरनि २ पगिहग ह २ सर्वकर्मः
 ययपानिस्वाहा ॥ ३ ॥ ६०३० ॥ ३ नमो गगवत् ॥
 वत्तक उवाजाय नथागगायाह न सम्यक् वद्धाय ॥ गय
 था ॥ वत्त २ महावत्त वत्तम्व वेवत्तमम्बे स्वाहा ॥ ६०३०

पंच

८

ॐ नमो भगवते ॥ अमृतगताया ॥ गथागताया ह-तसम्य
कै वृद्धाय ॥ गद्यथा ॥ ॐ अमृतग १ अमृतगव अमृतममृतव अ
मृतगसिद्धि अमृतगता अमृतगविका-न-अमृतगमिमिग अमृतग
गगल ॥ किहिकव अमृतगइइहिल्लवसर्वोर्थसाधन सर्वकर्म
कर्म कर्यक विस्वाहा ॥ ५ ॥ ॐ ॐ ॐ ॥ ॐ नमो भगवते ॥ अमी
द्यसिद्धि ॥ गथागताया ह-तसम्यकै वृद्धाय ॥ गद्यथा ॥ जि

३

वृद्ध

३

३४

३४

७ दीपक दीप

ॐ सुसिद्धाय नमः ॥ ॐ अमाद्यां प्रतिह न-हव २ सर्वकर्मव न
नकर्म कर्यकालियस्वाहा ॥ ॐ ॐ ॐ ॥ ॐ नीपक गथागतः
नामधव नियमिमाफ ॥ ६ ॥ ॐ नमो अमिनामगपुत्यस्य

मश

[illegible]

4

५४

त्रिलोकपिनिद्विष्यत् ॥ ६६३ ॥ आर्यामशुशीरहावकपति
हानामधवनिसमाफ ॥ ६६३ ॥ ०० ॥ नमो भुव आह ॥ नमो
वत्तगयाय ॥ नमो आर्यावलोकिने मयाय ॥ वीधिसत्त्वायम
हासत्त्वायमहाकावटिकाय ॥ तथैव ॥ मन्त्र १ गू १ १ १ १ १
नि १ निमलमजलसममजला सर्वतयमाकुनि सर्वपायतयत्यवि
माकुनि वाजतयवीरुय मवनवय अपियतय गयुतय अ

हय

जिनहय उदक हय पत्रय क हय स्यनाम द्विगत्तवा चोचमध
गत्तवा सिंहमधगत्तवा व्याधुमधगत्तवा सूर्यमधगत्तवा इ
गमधगत्तवा रुक्मिमधगत्तवा समुद्रमधगत्तवा कालपा
समधगत्तवा निलमधगत्तवा काम्भमधगत्तवा नवमध
गत्तवा सर्वद्वयधम अगे वकु १ मीमम सर्वसत्त्वाना के आ
यूमा योगध (अस्तु) आर्यावलोकिते ध्येयस्य हगे हविर्गवि

६
नाम

हय सर्वप्रसिद्धि स्थिति काना के माचनिक सिद्धिविजयनि
उनमा स्वाहा ॥ ॥ आर्य मरुयकत्री नामध वनिपविममाफ
॥ ॐ ॥ ॐ नमः श्रीमन्मन्त्राय ॥ पूर्ववत् जटिति शून्यतान
गवई का लाह्वं या गिनी गय नार्यकं हे वव कालिना विदा के क
धि का सूर्या एने पविगाधुर्वं शु महाकार्यं कष्टार्द्ध हविगा
हर्क ॥ वत्सति शुजास्तस्य सफादश विलाचनी उदाम

रु

कूटधर्मेवीरविश्ववज्राहं चतुर्कं महादशकलासायस
 वाविसवतःसदा नीलापीतात्रकहनिनंक्रममसुषा नुह
 मसन्निहाः महाबोडिहासच तेववान्निगाहिषयस्य
 वस्यकर्मावाडविशुद्धिसमाप् ॥ २०३॥ ॐ नमो गगवत्ये
 मार्यामहाप्रह्लापावमीगार्थ युर्वमार्याशुभमेकस्मीस
 मयगगवान् वाजगहविहगिस्म गृध्रकृगपर्वतमहाता

७

ववा

हि इत्यनसार्द्धमहनाचवोधिसत्त्वसंघेन तेनवलपूनस
 मयगगवान् गंहीनावतामन्नाधि मपय्यायीसमायने
 प्रह्लापावमीगाचर्या मवववलाकयस्मीस्म ॥ पकेस्म
 न्धमोतावशुन्यतायी ॥ तेनवलपून समयज्जार्थावला
 किंनश्चवोधिसत्त्वमहासत्त्वगमित्रायप्रह्लापावमिगाम
 वयसीतिस्म ॥ पचकन्धमोतावहन्यता ॥ ववलाकयंतिस्म

पुष्प

प्रा

अथायुष्मानानन्दोमालिपुत्रवृद्धानगावेन आर्यवलाकिने
स्वरा ॥ वाधिसत्त्वोमतदवाचनक ४ कचीत् कूलपूषावा
कूलइहिगावा ॥ अस्यायिगमोनायां पुष्पायानमिगायां
चर्या च उरकामस्तु नकथं गीरवीगव्यं नवमं नमूक ८
आर्यावलाकिनेस्वरावाधिसत्त्व महासत्त्व आयुष्मा
नन्दोमालिपुत्रम्यतदवाचन ५ ४ कचीत् कूलपूषा पाव

कूलइहिगावा अस्यागमोनायां पुष्पायानमिगायां चर्या च उ
कामस्तु नवव्यवलाकयिगवा ४ ॥ पक्षेस्तु नवव्यवलावस
न्यागानव्यवलाकशीतव्यं ॥ नृपशून्यं सन्यागवर्ष ॥ न
नृपाश्चैतथकमन्यागायां पृथग्वर्य ॥ नवविदना नमिहामस्तु
वाविहान ॥ नवविदसा विपुत्रसर्वधमस्तु वाव न्या ॥ अत्र
इति अनृत्यना अनिरुद्धा अमना विमना अनृत्य न्री

पक्ष

अस्यैव श्रुतस्माद्वहिगात्रिपुत्रश्चन्यगायं नवयवेदना नम
स्तस्कात्रा ॥ नदिस्तान नचक्षु नभारं ४ नष्टानं ४ नजिह्वा
४ नकाया ४ नमनी ४ नवर्ष ४ नसिन्धो ४ नगच ४ नवसा ४ नम
मपूया ४ नधर्म नचक्षुध ४ नवर्षध ४ नवीस्तानध ४
४ नचक्षुध ४ नवीस्तानध ४ नक्षत्रविष्णुध ४ नष्टा
नविस्तानध ४ नजिह्वा ४ विस्तानध ४ नकायवीहा
नध ४ नमगाविस्तानध ४ नविस्तानध ४ नविष्ठा ४

त

पा

या ॥ ननस्तस्कात्रा ४ या ॥ नवीस्तान ४ या ॥ ननामप ४
या ॥ नषदायन ४ या ॥ नमर्षाद ४ या ॥ नवेदना ४ या
नचक्षु ४ या ॥ नपादान ४ या ॥ नर ४ या ॥ नजाति ४ या
नज्वाम ४ या ॥ नःष ४ या ॥ नमड ४ या ॥ ननीवाध
नमार्ग ॥ नामार्ग ४ नवर्ष ४ नस्तान ४ नष्टानि ४ नाफी ४ ॥ ग
स्मार्तहिगमात्रिपुत्रश्चन्यगायं नवयवेदना नम

प ह्य

पह्लापात्रमिना मानशीलविदो नोचि हानवनमानत्वात् ॥
अनूयगावीपर्यगमनिका नोचि नोचिनीवीनपाफा स
र्ववृद्धेनपियह्लापात्रमीताशीय अनूहत्रायांसम्यकसंवा
धिरसिधिवृद्धा ॥ तस्माहदीगासात्रिपूजह्लापात्री पह्लापा
त्रमिनामनु महाविद्यामन्य अनूहत्रामन्य ४ असमा
मंज सर्वमइ प्रसमामन्य ॥ सम्यक्संमिथ्यात्वात्

१०

पात्र

ॐ नमो हगवत्यमहाम ऊ स्वरी श्रीमहागुरु नमः ॥ ॐ नम
४म ऊ नाथाया ॐ नमः वृक्षाय नमो धर्माय नमो सदाय ॥
ॐ नमः हगवत्यम ऊ श्रीकमाल उनाय वाधिसत्वाय महा
सत्वाय महामत्वाय महाकाय दिकाय ॥ नमः ॥ अनं
विन ऊ वृद्धविशुद्ध साधनी विस्वधनी नमः लविम

मंजरी

٩

[illegible]

9

धन

धनो हवन्ति । उदियत्र ऊ जायेत मरु श्री नृप पश्यन्ति । पचा
 नष्ट ऊकं चित् । सापि सिधिस्यात् ऊदि सिध्दनि । ददाति । अ
 र्यो मरु श्री रुक्मा व क स्य पति ग्म ननाम ध्रुव निय वि समार
 ४॥ १ ॥ ३ नमो गवन्ध वे नोचन प्र क क रु वा जाय । न
 था गताया हे न सम्यक् व द्वाय । न यथा । ३ मू ३ स म २ स

81 9

॥ इति ॥

5

10

15

पंचवृद्ध

२

मय २ शर्मा २ दानो २ दुसमा साध्या गल म्बि अना व म्बि द सव

मिमहा ग ३ निरा व म्बि निरा कू ल निवा ८ ८ सर्व वृद्ध धि

छानां धि धि ग स्वा हा ॥ १ ॥ ३ नमः गग व म्बः ६ ३ ॥

हा या जाय ॥ ग य थ ॥ ग ना या ह नो सम्य सं व द्वा य ॥ ग य थ

॥ ३ कं क ति २ वा क नि २ यी च नि २ यी ट नि २ य गि ह न ह न २ धा व

यं क त्रि य स्वा हा ॥ १ ॥

नि पंच म्ब द्वा न थ गग ना

म धा य नि प त्रि स मा फ ४ ॥ ॥ स र स म्ब ग ८ ॥ ३ मि

शृ ग म क कृ ष नू स चा या श ल गृ र मी ग ल सर्व दा ४ ॥

पञ्चवध

४

२ पंच वृद्ध धन न नी ॥

फराणीन्दुरत वज्राचार्य

४

पञ्च